



॥ श्री रुक्मिणी चालीसा ॥
॥ ॐ रुक्मिण्यै नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री रुक्मिणी चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

जय रुक्मिणी जगदम्बिका, कृष्णप्राण अधार।
भक्ति, प्रेम, सुख, शान्ति दो, हरो सकल संताप॥
विदर्भपुरी अवतारिणी, लक्ष्मी रूप अपार।
शरण पड़े जो भक्त जन, कर दो भव से पार॥

॥ चौपाइयाँ ॥

जय रुक्मिणी जग जननी माता।
कृष्णप्रिया सुखधाम विख्याता॥
विदर्भराज की सुत प्यारी।
महालक्ष्मी तुम हितकारी॥

रूप अलौकिक परम सुहावन।
देखत हरषित होय त्रिभुवन॥
कमल-लोचन मृदु मुस्कानी।
करुणा-सागर मंगलखानी॥

कृष्ण-प्रेम में चित्त लगाया।
पत्र लिखि हरि को बुलवाया॥
हरि रथ चढ़ तुमको ले आए।
शिशुपाल के गर्व मिटाए॥

द्वारकापुरी बनी तुम्हारी।
जग में महिमा अति ही न्यारी॥
कृष्ण वाम-अंग सदा विराजो।
भक्त हृदय में प्रेम समाजो॥

पतिव्रता आदर्श तुम्हारा।
जग करता गुणगान तुम्हारा॥
धर्म, प्रेम की ज्योति जगाती।
भक्तों के सब कष्ट मिटाती॥

जो नर-नारी ध्यान लगावें।
मनवाञ्छित फल शीघ्रहि पावें॥
दीन-दुखी की लाज बचावो।
अपने चरणों में बसावो॥

सौभाग्य की तुम हो दाता।
सुख-समृद्धि की भाग्य-विधाता॥
संतति, धन, वैभव बरसाओ।
जीवन में मंगल भर जाओ॥

भक्ति-भाव दृढ़ कर दो माता।
हर लो मन का मोह-विषादा॥
क्रोध, लोभ, मद दूर भगाओ।
सत्पथ पर चलना सिखलाओ॥

कृष्ण-नाम में मन रम जाए।
जीवन सफल सहज बन जाए॥
जो यह चालीसा नित गावै।
हरि-रुक्मिणी कृपा वह पावै॥

घर में प्रेम सदा बसि जावे।
क्लेश-दरिद्र निकट न आवे॥
अन्न-धन की वृद्धि हो भारी।
रहे कृपा तुम सदा हमारी॥

भक्त तुम्हारा जो गुण गावै।
भवसागर से पार उतरावै॥
करुणा करके दर्शन दीजो।
चरण-कमल में स्थान दीजो॥
प्रेम-भक्ति का दान दिलाओ।
श्रीकृष्ण चरणों तक पहुँचाओ॥

॥ दोहा ॥

रुक्मिणी माता की कृपा, रहे सदा सिर मोर।
कृष्ण सहित हृदय में बसो, मिटें जन्म के छोर॥
भक्ति, प्रेम, सौभाग्य दे, हरो सकल संताप।
रुक्मिणी माता शरण में, पूर्ण करो सब जाप॥

॥ इति श्री रुक्मिणी चालीसा सम्पूर्णम् ॥

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"